JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बुशहर रियासत का दूम्ह आंदोलन

राकेश कुमार
शोधार्थी- इतिहास विभाग
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय
Email :- rakeshk9548@hotmail.com

शोध सारांश

हिमाचल की पहाड़ी प्रजा ने दोहरी गुलामी के उपरांत भी समय-समय पर राजाओं, राणाओं, ठाकुरों, सामंतों तथा रियासत के भ्रष्ट कर्मचारियों के अत्याचार, शोषण और तानाशाही के विरुद्ध लम्बा संघर्ष किया। परिणामस्वरूप यहां कई प्रारम्भिक जन-आंदोलन हुए। ये आंदोलन इस पहाड़ी क्षेत्र में दूम्ह, जुग्गा और डांडरा आदि पृथक् - पृथक् नामों से जाने जाते हैं। दूम्ह का शाब्दिक अर्थ असहयोग होता है। दूम्ह आंदोलन वास्तव में स्थानीय समस्याओं को लेकर चलाए जाते थे। इस प्रकार के आंदोलन प्रायः भूमि बंदोबस्त, लगान, बेगार, बेठ, भ्रष्टाचार, शोषण और तानाशाही के विरुद्ध हुआ करते थे। अधिकतर दूम्ह आंदोलन अहिंसात्मक ही होते थे परन्तु भ्रष्ट देशी शासकों और कर्मचारियों के अत्याचार जब हद से बढ़ जाते थे तो प्रजा हिंसा पर भी उतारू हो जाती थी। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के परिणाम स्वरूप पहाड़ों की जनता में चेतना का जबरदस्त संचार हुआ। इसके उपरांत जनक्रांति का हिमाचल में एक क्रम सा आरंभ हो गया। दोहरी दासता के राजनीतिक वातावरण में सन् 1858–59 ईस्वी में बुशहर रियासत के किसानों ने नकदी भूमि लगान के विरोध में एक अहिंसात्मक आंदोलन किया जिसे स्थानीय बोली में 'दूम्ह' कहा जाता है। प्रजा में असंतोष के कई कारण थे। बुशहर रियासत के राजा लोगों की आकांक्षाओं के अनुरूप शासन चलाने में सक्षम नहीं था। रियासत में अशांति का महौल पैदा हो गया था। राज्य की आय का मुख्य साधन भू-राजस्व था। यह विरोध एक प्रकार का असहयोग आंदोलन होता था जिसमे किसान अपने घर संपत्ति छोड़कर जंगल में जीवन व्यतीत करते थे। कृषि करना छोड़ देते थे जिससे खड़ी फसले नष्ट हो जाती थी। ये विरोध तब तक चलते थे जब तक उनके मांगे न मान ली जाए। कृषि बंद होने के कारण सरकार को भारी हानि उठानी पड़ती थी तथा साथ ही रियासत में विद्रोह भड़कने की आशंका बनी रहती थी। अंततः इस आंदोलन को एक ब्रिटिश अधिकारी के हस्तक्षेप के माध्यम से शांत किया गया तथा आंदोलनकारियों की मांगों को स्वीकार कर लिया गया। प्रस्तुत

शोध में बुशहर रियासत के दूम्ह आंदोलन का राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान और प्रासंगिकता को इंगित करने का प्रयास किया गया है।

संकेत शब्द *- जन-आंदोलन, भूराजस्व, दूम्ह, बेगार, स्वतंत्रता संग्राम*

शोध की प्रस्तावना

सन् 1857 ईस्वी की क्रांति के प्रभाव से तत्कालीन हिमाचल एवं समस्त भारत के संवैधानिक और राजनीतिक जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण परिवर्तन आए। महारानी विक्टोरिया की ब्रिटिश साम्राज्यवादी सरकार ने भारत के प्रत्यक्ष नियंत्रण और कुशल प्रशासन के लिए ब्रिटिश संसद में भारत सरकार अधिनियम, 1858 पारित करवाया। इस अधिनियम के अंतर्गत ईस्ट इंडिया कंपनी की सरकार को समाप्त करके भारत के प्रशासन पर पूर्णता ब्रिटिश क्राउन और संसद का नियंत्रण स्थापित कर दिया गया। ब्रिटिश सरकार ने भारत के प्रशासन की जिम्मेदारी संभालने के लिए 'भारत राज्य सचिव' की नियुक्ति की। 1 नवंबर 1858 की विक्टोरिया घोषणा के द्वारा तत्कालीन ब्रिटिश गवर्नर जनरल चार्ल्स जॉन विस्काउट कैनिंग को भारत का प्रथम वायसराय नियुक्त किया गया।

भारत सरकार अधिनियम 1858 के अंतर्गत तत्कालीन हिमाचल के पर्वतीय क्षेत्रों पर ब्रिटिश सरकार का सीधा नियंत्रण स्थापित हो गया। उस समय हिमाचल में दो प्रकार का शासन प्रबंध प्रचलित था। पंजाब हिल स्टेट्स में नूरपुर, कांगड़ा, जसवां, गुलेर, सिबा, दतारपुर, कोटला, कुल्लू, भंगाहल और लाहौल - स्पीति की रियासतें अपना प्राचीन अस्तित्व खो चुकी थीं। अंग्रेजों ने इन रियासतों को जीत कर ब्रिटिश साम्राज्य में मिला दिया था। इनके शासकों को छोटी - छोटी जागीरें व पेन्शन देकर जमींदार व जागीरदार बना दिया गया था। इन सब रियासतों के क्षेत्र को संगठित करके एक प्रशासनिक इकाई के रूप में जिला कांगड़ा बना दिया गया। इस का प्रशासन डिप्टी कमिश्नर कांगड़ा नियंत्रण में था। इसके अतिरिक्त शिमला हिल स्टेटस में जतोग, सुबाथू, कसौली, डगशाई, कोटगढ़, कोटखाई, बहरौली, सनावर एवम् शिमला शहर अलग - थलग क्षेत्रों को मिला कर 'जिला शिमला' बना दिया गया था। जो डिप्टी कमिश्नर शिमला के प्रत्यक्ष नियंत्रण के अधीन था। उपरोक्त जिला कांगड़ा, जिला शिमला और चम्बा रियासत का डलहौजी एवं बकलोह छावनी क्षेत्र अंग्रेजों के प्रत्यक्ष नियंत्रण में थे और ये पंजाब प्रांत के पर्वतीय भाग थे। इस प्रकार हिमाचल का आधे से ज्यादा क्षेत्र ब्रिटिश साम्राज्य में सम्मिलित था और इसमें ब्रिटिश सरकार का प्रत्यक्ष शासन और नियंत्रण था।

देसी शासकों के अधीन लघु राज्यों में शिमला हिल स्टेट्स और सतलुज के आर - पार की रियासतें आती थीं। शिमला हिल स्टेट्स अथवा सिस सतलुज स्टेट्स में बुशहर, क्योंथल, जुब्बल, कुमारसेन, कुनिहार, बाघल, बघाट, बलसुन, शांगरी, कुठाड़, बेजा, भज्जी, दरकोटी, धामी, मांगल, महलोग, घरोच, नालागढ़, खनेटी, देलठ, ठियोग, घुढ़, कोटी, मघाण, रतेश और रावीं रियासतें आती थीं और इनमें देशी शासकों का प्रशासन था। यद्यपि इन रियासतों ने अंग्रेज़ों का प्रभुत्व स्वीकार किया परन्तु ये अपने आंतरिक शासन में स्वायत्त थी। ब्रिटिश सरकार ने इनके नियंत्रण के लिए सुपरिटेंडेंट और कमिश्नर, शिमला हिल स्टेट्स को नियुक्त किया। दूसरी ओर सतलुज पार की कुछ रियासतों में मण्डी, सुकेत, बिलासपुर, चम्बा और कुटलैहड़ में भी देशी राजाओं का राज था। अंग्रेजों के प्रभुत्व में इनके अधीक्षण और नियंत्रण के लिए सुपरिटेंडेंट सिस सतलुज

स्टेट्स की नियुक्ति की गई थी। इन सभी रियासतों पर पंजाब सरकार द्वारा नियुक्त ब्रिटिश अधिकारियों का नियंत्रण रहता था। ब्रिटिश सरकार को किसी भी राजा, राणा और ठाकुर के राज्य क्षेत्र में आंतरिक अशांति और कुप्रशासन की अवस्था में हस्तक्षेप करने का अधिकार था।

हिमाचल प्रदेश उस समय पंजाब के पहाड़ी क्षेत्र का हिस्सा था। पहाड़ी रियासतों के शासक अंग्रेजों की दया पर शासन चला रहे थे। इन रियासतों में अंग्रेजों द्वारा स्थापित नई प्रशासन व्यवस्था, आर्थिक नीतियां, भूराजस्व की नई प्रणाली व न्यायिक व्यवस्था ने आम जनता की कमर तोड़ दी थी। ब्रिटिश सरकार की इस शोषणकारी प्रणाली के विरूद्ध जनसाधारण में व्यापक असंतोष फैला हुआ था। दोहरी दासता के राजनीतिक वातावरण में पहाड़ी प्रजा में सर्वप्रथम बुशहर रियासत के लोगों ने प्रशासन के आर्थिक शोषण के खिलाफ आवाज उठाने की हिम्मत जुटाई और राजाओं के दमनकारी शासन के विरुद्ध संघर्ष का मार्ग अपनाना आरंभ कर दिया। निरंकुश राजाओं और अन्य भ्रष्ट अधिकारियों के विरुद्ध उठे इस प्रकार के जन आंदोलनों का हिमाचल के स्वतंत्रता संग्राम में विशेष महत्व है क्योंकि इससे राष्ट्रीय चेतना के विकास में विशेष सहायता मिली। इस प्रकार के असहयोग आंदोलन से ही यहां की प्रजा स्वतंत्रता के गुणों को समझ सकी थी तथा अपने मौलिक अधिकारों के प्रति जागरूक हो सकी थी।

बुशहर रियासत उस समय मुख्य रूप से तीन प्रांतों में विभाजित थी। इनमें से दो हिमालय के मानसून क्षेत्र में थे और एक तिब्बत की सीमाओं के साथ ट्रांस हिमालय क्षेत्र में फैला हुआ था। इसको किनौर कहा जाता था। इसके मुख्य बस्ती चीनी थी। यहां के लोग तिब्बती जाति लामावादी बौद्धवादी संप्रदाय का पालन करते थे। अन्य दो परगनो से इसकी सामाजिक तथा आर्थिक संरचना भिन्न थी क्योंकि यहां की जलवायु में मानसून की अनुपस्थिति थी। जिससे यहां की अर्थव्यस्थता कृषि पर आधारित न होकर पशुपालन पर आधारित थी। बुशहर रियासत के मानसून क्षेत्र में रामपुर और रोहडू परगने थे जो कि सतलुज और पब्बर नदी घाटियों पर स्थित थे। मुख्यता रोहडू घाटी कृषि, खाद्य फसलों विशेष रूप से चावल, अदरक और अफीम जैसी वस्तुओं के लिए काफी प्रसिद्ध था। दोनों परगनो में राजनीतिक अर्थव्यवस्था का रूप था। प्रत्येक परगने में एक वंशानुगत पूर्व-प्रतिष्ठित राजनीतिक परिवार से संबंध रखने वाला वजीर यहां के राजनीतिक प्रशासन और राजस्व एकत्र करने के लिए राज्य के प्रति उत्तरदायी होता था। प्रत्येक वजीर अपने परगनो मे राजस्व के बकाया का मूल्यांकन तथा संग्रह के लिए जिम्मेदार था।

सन् 1850 ईस्वी में महेंद्र सिंह की मृत्यु हो जाने पर उसका अल्पवयस्क पुत्र शमशेर सिंह 11 वर्ष की आयु में बुशहर रियासत की राजगद्दी पर बैठा। नाबालिक होने के कारण पावरी वजीर मनसुख दास अभिभावक के तौर पर प्रशासन का कार्य चलाता रहा। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के समय राजा शमशेर सिंह ने ब्रिटिश सरकार की सहायता नहीं की तथा वार्षिक नजराना देना भी बंद कर दिया। महारानी विक्टोरिया की घोषणा के अनुसार देशी शासकों के प्रति विनम्र और क्षमाशील रवैया अपनाया गया। इसी के तहत बुशहर रियासत के राजा शमशेर सिंह के 1857 की क्रांति के दौरान के विरोधी व्यवहार को नज़रअंदाज किया गया। शिमला हिल स्टेट्स के पॉलिटिकल एजेंट एवं डिप्टी कमिश्नर, लॉर्ड विलियम हेय की राजा शमशेर को पदच्युत करने और बुशहर रियासत को अंग्रेज़ी साम्राज्य में मिलाने की सिफारिश को चीफ कमिश्नर पंजाब, जॉन लारेंस ने अस्वीकार कर दिया। अतः बुशहर के विरुद्ध कोई कार्रवाई न हो सकी।

राजा शमशेर सिंह के समय में रियासत की परिस्थितियां और भी बिगड़ती गई। वह भी अपने पिता की भांति अधिकतर नशे की हालत में रहता था। वह बिना सोचे समझे प्रजा के खिलाफ विरोधी फैसले सुनाने लगा। रियासत के वजीरो ने अपना प्रभुत्व स्थापित करने के उद्देश्य से राजा को लोगों की पहुंच से दूर कर दिया। वजीर मनमाने ढंग से प्रजा का शोषण करने लगे। इसके अतिरिक्त राजा शमशेर सिंह की दूसरी मां जो गढ़वाली रानी के नाम से विख्यात थी, ने भी रियासत के प्रशासन में दखलअंदाजी प्रारंभ कर दी। उसने अपने दो नौकरों उमा दत्त और विशन दास के सहयोग से रियासत की प्रशासनिक बागडोर अपने हाथ में लेने का प्रयास किया। लोग यह नहीं समझ पा रहे थे कि शासन कौन चला रहा है। रियासत में कर संग्रह का सिद्धांत यह था कि किसानों द्वारा उत्पादित प्रत्येक वस्तु में राज्य का हिस्सा होता था तथा यह भी कि राज्य की हर आवश्यकता को प्रजा द्वारा पूरा किया जाना था। इसके अलावा राज्य में कोई विशेष आयोजनों के दौरान जैसे शाही जन्म उत्सव, विवाह, मृत्यु आयोजनों में प्रत्येक परिवारों से एक एक पुरुष को वर्ष में छः महीनों के लिए बेगार करने के लिए राजमहल में उपस्थित होना पड़ता था। रियासत में अठवाड़ा बेगार और बेठ बेगार का बोलबाला था। लोगों को बेगार न केवल राजा के महल में ही करनी पड़ती थी अपितु वजीरो के घरों में भी काम करना पड़ रहा था। रियासत में जब लवी का मेला आयोजित किया जाता था तो लोग पूरे वर्ष घरों में बनाए गए कीमती सामान को बेचने के लिए रामपुर लाते थे। मेले में रियासत के वजीर, भ्रष्ट अधिकारी और अन्य कर्मचारी मनमाने ढंग से लोगों द्वारा लाई गई वस्तुओं को कर के रूप में वसूलते थे। इससे लोगों में राजा और उसके कर्मचारियों के प्रति गहरा रोष व्याप्त था।

1851 ईस्वी में नूरपुर के तहसीलदार श्यामलाल को शिमला हिल स्टेट्स के अधीक्षक के अंतर्गत बुशहर रियासत का मैनेजर बनाया गया। ब्रिटिश सरकार के निर्देशानुसार 1854 ईस्वी में राजा शमशेर सिंह ने भूमि की पैमाइश करवाई। तहसीलदार श्यामलाल ने ब्रिटिश अफसर के रूप में पंजाब में अपने पिछले पद के दौरान हासिल की गई भूमि माप प्रणाली को बुशहर के पहाड़ी इलाकों में लागू किया तथा नगदी के रूप में भू राजस्व निश्चित किया। यहां की अर्थव्यवस्था लगभग पूरी तरह से गैर-मुद्रीकृत थी । इससे पहले किसान अपनी ऊपज का ⅕ हिस्सा राज्य को भू-राजस्व के रूप में देते थे। इसके अलावा परंपरा के अनुसार कई अन्य वस्तुओं जैसे तेल, घी, दूध, ऊन, भेड़, बकरी आदि 'कर' के रूप में राजा को भेंट करते थे। प्रायः लोगों का राज्यों के साथ लेनदेन और परस्पर व्यापार वस्तु तथा अन्य विनिमय के माध्यम से होता था। किसानों के पास नगद सिक्को की कमी रहती थी, अतः वे नगद भूमि लगान देने में असमर्थ थे। वस्तु विनिमय आधारित अर्थव्यवस्था दिवालिया हो गई। यह भू-राजस्व प्रणाली बुशहर के पहाड़ी वातावरण के लिए अनुपयुक्त साबित हुई। इसके साथ-साथ स्थानीय अधिकारियों व वजीरो की राजस्व शक्तियों में कमी के साथ-साथ उनकी राजनीतिक शक्ति को भी कम करने का प्रयास किया गया। किसानों को लगा उनका जीवन पहले की तुलना से और अधिक कठिन हो गया है। लोगों में असंतोष उस समय और भी गहरा हो गया जब पावरी वजीरी के प्रभावशाली वजीर मनसुख दास और तहसीलदार श्यामलाल के बंदोबस्त संबंधी कार्य अपनी अपनी दिशा में चलने लगे। मनसुख दास वास्तव में एक परंपरागत वजीर था और उसे ब्रिटिश सरकार के बंदोबस्त संबंधी कानूनों का पता नहीं था। उसने परंपरागत भूमि लगान की हिमायत की जिससे लोगों को बल मिला और लोगों ने श्यामलाल द्वारा निर्धारित नगर भूमि लगान को अपनी आंतरिक स्वायत्ता पर सीधा प्रहार माना। राजा शमशेर सिंह ने ब्रिटिश सरकार के आदेश पर परंपरागत वजीरों पावरी, शुआ, कूल के पद भी समाप्त कर

दिए थे। ब्रिटिश सरकार ने परस राम को वजीर का पद दे दिया जो की परंपरागत वजीरो के परिवारों से संबंधित नही थे। प्रजा ने इस कदम को भी परंपरागत व्यवस्था को बदलने के प्रतीक के रूप में लिया। जिस कारण इस बंदोबस्त का विरोध बढ़ता गया तथा बड़ी संख्या में किसान श्यामलाल के बंदोबस्त के खिलाफ सामने आए। प्रजा नगद भू राजस्व का भुगतान नहीं कर पा रही थी। इन सभी कारणों के विरोध में रियासत की प्रजा ने अहिंसात्मक असहयोग आंदोलन प्रारंभ किया। इस प्रकार के पारस्परिक विरोध को पहाड़ी समाज में 'दूम्ह' कहते थे। यहां 'दूम्ह' शब्द का शाब्दिक अर्थ सामूहिक असहयोग प्रदर्शन था। दूम्ह आंदोलन का एक महत्वपूर्ण पहलू यह था कि प्रदर्शनकारी शपथ के माध्यम से एक दूसरे से बंधे होते थे जिसे ऊपरी पहाड़ियों में गट्टी और निचले इलाकों में चाल कहा जाता था। यह शपथ अधिकारियों के अन्यायपूर्ण उत्पीड़न का विरोध करने के लिए स्थानीय मंदिर के देवताओं के समक्ष ली जाती थी। बुशहर रियासत का रोहड़ू क्षेत्र इस आंदोलन का सक्रिय केंद्र था। परंपरा के अनुसार आंदोलनकारी किसान अपने परिवार संपत्ति तथा पशुधन सहित अपना गांव छोड़कर जंगल में चले जाते तथा कष्टकारी जीवन व्यतीत करने लगते थे। जिस कारण कई गांव उजाड़ हो गए, खड़ी फसलें नष्ट हो गई और खेत बंजर हो गए। दूम्ह आंदोलन से बुशहर रियासत में अशांति फैल गई और सरकार विचलित हो गई। राज्य की आय का मुख्य साधन भू-राजस्व था। खड़ी फसलों के नष्ट होने और कृषि बंद होने के कारण सरकार को भारी हानि उठानी पड़ी तथा साथ ही रियासत में विद्रोह भड़कने की आशंका उत्पन्न हुई। इस समय प्रजा में पनपते असंतोष का नेतृत्व राजा शमशेर सिंह के सौतेले बड़े भाई मियां फतेह सिंह ने किया। फतेह सिंह यद्यपि उम्र में बड़ा था परंतु छोटी रानी की संतान होने के कारण वह राजगद्दी से वंचित रहा था उसने इसका बदला लेने के उद्देश्य से किन्नौर के हगरंग और कोची इलाकों में लोगों को संगठित कर विद्रोह के लिए प्रेरित किया। जिस कारण इस आंदोलन का सवरूप बढ़ता ही गया। अत: ब्रिटिश सरकार ने इस आंदोलन को समाप्त करने की दृष्टि से हस्तक्षेप करने का प्रयास किया, क्योंकि ब्रिटिश अधिकारियों ने नगद भू राजस्व की मांग की थी। इस संबंध में शिमला के ब्रिटिश अधिकारी डिप्टी कमिश्नर विलियम हेय बुशहर पहुंचा उसने राजा शमशेर सिंह से दूम्ह आंदोलन के संबंध में विचार-विमर्श किया। इसी बीच शिमला हिल स्टेट्स के सुपरिटेंडेंट जी. सी. बार्न्स अपनी सेना की टुकड़ी लेकर बुशहर की सीमा पर पहुंचे। परंतु ब्रिटिश सरकार के आदेशानुसार उनको इस आंदोलन को आहिंसात्मक रूप से हल करने का आदेश मिला। राजा शमशेर सिंह और ब्रिटिश अधिकारियों के मध्य हुई बैठक में आंदोलनकारियों पर बल न प्रयोग करने का निर्णय लिया गया। रियासत के कुछ प्रतिष्ठित अधिकारी और आंदोलनकारी किसानों के प्रतिनिधियों का आपस में विचार विमर्श होने के पश्चात आंदोलनकारी किसानों ने अपना आंदोलन समाप्त करने के लिए तीन मांगे सरकार के समक्ष प्रस्तुत की –

1. नगद भू राजस्व व्यवस्था को समाप्त करना।
2. परंपरागत उपज और अन्य वस्तुओं के माध्यम से भू राजस्व सुनिश्चित करना।
3. खानदानी वजीरो को परंपरागत रूप से सत्ता सौंपना।

विद्रोह में शामिल विभिन्न लोगों, राज्य के प्रशासन अधिकारियों की जांच करने के पश्चात सुपरिटेंडेंट बार्न्स इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि ब्रिटिश सरकार द्वारा शुरू की गई नगद राजस्व व्यवस्था बुशहर रियासत की परिस्थितियों के अनुकूल नहीं थी। इसका का समर्थन करने के लिए उन्होंने तीन कारण बताए –

1. रियासत की भौतिक स्थिति अधिकतर पहाड़ी तथा कृषि प्रणाली बहुत पिछड़ी थी।

2. स्थानीय अर्थव्यवस्था वस्तु विनिमय प्रणाली पर आधारित थी। जिस कारण नगद की राशि भुगतान करने को मुद्रा की अनुपलब्धता थी।
3. बुशहर की राजनीतक व्यवस्था को बदल कर जिस पर राज्य का राजस्व प्रशासन आधारित था। पारंपरिक वजीरो की शक्ति में कमी करना तथा बाहर से अधिकारी की नियुक्ति करना।

ये बुशहर रियासत में अशांति के मुख्य कारण थे जिस से प्रजा में असंतोष फैला हुआ था। इस नई प्रणाली ने पूरे प्रशासन के कामकाज में अराजकता उत्पन्न कर दी थी। जी.सी. बार्न्स ने बुशहर रियासत में आंदोलन की गंभीरता को देखते हुए मांगें तुरंत स्वीकार कर ली। नकद भू राजस्व व्यवस्था के स्थान पर परंपरागत भू राजस्व व्यवस्था को पुनः स्थापित किया गया। वजीरो को उनके परंपरागत पद पुन: प्रदान किए गए। इस प्रकार बुशहर रियासत के किसान देसी शासकों और अंग्रेजी सरकार से अपनी मांगे मनवाने में सफल हुए। 1857 ईस्वी की क्रांति के पश्चात पश्चिमी हिमालय की पहाड़ी रियासतों में अंग्रेजों के विरुद्ध उठे नफरत और अत्याचार के विरोध के कारण आम जनमानस अंग्रेजी अधिकारियों के खिलाफ खड़े हो गए। बुशहर रियासत के किसानों का अहिंसक आंदोलन देसी शासन और अंग्रेजी सरकार से संघर्ष करने की प्रेरणा दे गया। आंदोलन की घटनाएं गांव-गांव और घर-घर में वर्षों तक गंभीर चर्चा का विषय बनी रही थी। पहाड़ के लोगो में अपने अधिकारों के लिए संघर्ष की चेतना का विकास धीरे धीरे बढ़ता गया। इस आंदोलन के बाद देसी शासकों के साथ-साथ ब्रिटिश सरकार के खिलाफ भारी असंतोष का लावा विभिन्न पहाड़ी आंदोलनों में फूटा। आम जनता में राष्ट्रीय चेतना का विकास तीव्र गति से होने लगा।

सन्दर्भ –

1. *हिमाचल प्रदेश में स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास*, भाषा एवं संस्कृति विभाग हिमाचल प्रदेश, शिमला, 2013
2. गोवर्धन, सिंह मियां, *हिमाचल प्रदेश का इतिहास*, हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी, शिमला, 2020
3. बलोखरा, जगमोहन, *अलौकिक हिमाचल प्रदेश,* एच. जी. पब्लिकेशन, 2015
4. हिम, हिमेंद्र बाली, *हिमालय गौरव हिमाचल प्रदेश का भूगोल एवं इतिहास*, एशियन प्रेस, 2020
5. Alam, Aniket, *Becoming India Western Himalyas Under British Rule*, Cambridge University Press India, Pvt. Ltd. 2008
6. Himachal Pradesh district Gazetteers: Kinnaur, Ambala 1971
7. Moren, Arik, *From mountain trade to Jungle politics: The transformation of kingship in bashahr, 1815-1914*. The Indian Economic and Social History Review.44,2; (155-157), 2007